अधूरा ~~[illegible]~~ वादा

आराम से बहती नदी की तरह, घाव से निकलती खून की तरह धीरे-धीरे वक्त बीत रहा था। कहते है जब आँख है, तब उसका कीमत पता नही चलेगा। जब वह हमारे पास ना हो तभी उसका कीमत पता चलेगा। उसी तरह जब समय है, तो उसकी कीमत पता नही चलेगा। आधा टूटा खिड़की से बारिश को देखते हुए, एक लंबी सास लेकर मुन्नी फिर सोने गयी।

वक्त कभी किसी के लिए नही रुकती। घड़ी में समय ~~[illegible]~~ सुबह ग्यारह बज गयी। मन नही थी, लेकिन मुन्नी फिर भी उठ गयी। चहेरा साफ करने के समय, हर दिन की तरह उसकी ~~[illegible]~~ नाक से खून आई।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 642 Participant Code: 105

खुद की दुख, दिल में दबाने की आदत थी मुन्नी को। घर की हालात वह जानती थी। उसकी सिर्फ एक दादाजी ही थे। सुबह से रात तक वह हमेशा काम करता था। दादा चाहती था की मुन्नी पढ़ लिखकर कलक्टर बने। मुन्नी अपनी दादा को उदास नहीं करना चाहती थी। इसलिए अपनी बिना नाम की उसकी बिमारी को दादा से छुपाया।

भारी दिल के साथ हमें हमेशा लगाता है की समय नहीं बीत रही। क्या असल में ऐसा है? इनसान को तो कभी वक्त ही नहीं, है ना? या इधर देखने की या उधर देखने की। सही में अच्छे काम करने केलिए इनसान के पास वक्त नहीं, और बुरा करने केलिए बहुत सारा वक्त है।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

सागर की लहरों से टकराती हुई ठंडी हवाँ हरी पत्तों से भरी पेड़ को देखकर धीरे मुस्कुराया, उस मुस्कुराहट में बिगली पेड़ ने अपनी खुशी से बारिश के बाद होने वाली ठंडी हवाँ की तरह नाचकर मुन्नी की घर की ~~खिड़~~ दरवाज़े पर खटखटायी।

तूफान की पहले आने वाले खमोशी की तरह मुन्नी की दिल और ~~कि~~ दिमाग भी खामोश था, अगर उसकी बिमारी की इलाज करना है, तो दादा की पूरी ज़िंदगी की कमाई मिट्टी में मिल जायेगी, यह सोचकर वह रोने लगी, रोने वक्त उसकी नाक से ज्यादा खून आने लगी, इस बार मुन्नी ~~वह दर्द~~ दर्द को झेल नही पायी, वह बेहोश होगयी, ~~बेचारा~~ बारह साल की वह बच्ची बिना खुद जाने मौत से जिंदगी केलिए ~~लड़~~ लड़ रही थी,

पीठ में घुसाते तलवार की तरह, अंधेरे से भरे उसकी आँखों में रोशनी घुस गयी। मुन्नी आँखें खोली। उसने देखा की सफेद कपड़े में एक औरत वहा खड़ी थी। उसने सुना है की परि सफेद कपड़ा पहनती है। उसने सोचा कही वह सच में मरकर स्वर्ग तो नही पहुँची। तभी उस औरत ने कहाँ, बेटा तुम्हें नन्दू के दादा ने यहाँ लायी और जल्दी काम केलिए निकल गयी।

उसे बहुत दुख महसूस हुई यह जानते की दादा उससे ज़्यादा काम को पसंद करती है। क्योंकी बहुत पता थी की यह सब उसके लिए है। लेकिन उस बच्ची की दिल यह नही मानती थी। क्या उस मासुम दिल में दादा केलिए नफरत होने जा रही थी?

Item Code: 642 Participant Code: 105

मन्नी घर लौट आगयी, बिना कुछ खाये पीये और साथे, दादा को अपनी गुस्सा दिखाने का सोचा, रात बारह बज गए, बारिश में भीगी इनसान की तरह, पसीने में भीगते हुए दादा घर आगया, दादा एक ऐस इनसान था, जो कभी ~~कि~~ अपने दिलमें बहते प्यार को नही दिखाता,

हमेशा सब कुछ दबाकर रखना ठीक नही होगा, कभी तो वह फटेगा, लेकिन दादा इसकेलिए भी तैयार था, कुछ वक्त कुछ चीज़ें छोड देनी चाहिए, अपनों को उनका कीमत एहसास दिलाना ज़रूरी है,

जब ~~वक्त~~ समय बीत जाएगा और वह लोग हमारा साथ नही होगा उसके बात ~~पश्चा~~ पश्चाताप करकर क्या फायदा होगा?

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

School Kalolsavam 61-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2023 ജനുവരി 3 – 7 കോഴിക്കോട് Kozhikode, Jan. 3-7

Item Code: 642 Participant Code: 105

वक्त निकल जा रही थी, दादा ने देखा तो मुन्नी कुछ नहीं खायी, उन्होंने उसे बहुत बार बुलाई, लेकिन मुन्नी नहीं आई, उस रात दादा भी ~~भू~~ भूखे पेट ~~के~~ के साथ सोने फैसला ~~किक~~ लिया,

~~वक्त समय निकली~~

समय निकलती रही और साथ साथ एक महीना भी, उन लोग खाना तो खा ~~लिए~~ लिया, लेकिन एक दूसरे से बात नहीं की, दादा और भी देर लगाकर घर लौटने लगा,

तेज़ बारिश की रात थी, भारी पत्थर गिरने की तरह बिजली चटकने लगा, अपने टूटा हुआ खिड़की को मुन्नी ने एक कपड़े लगाकर तेज़ हवाँ को अंदर आने से रोक लिया,

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2023 ജനുവരി 3 – 7 കോഴിക്കോട്
School Kalolsavam Kozhikode, Jan. 3 to 7

Item Code: 642 Participant Code: 105

हवा को तो रोक लिया, लेकिन जिंदगी में आने वाली तूफान को कभी रोक सकता है, ~~वक्त~~ समय का बीतने से वह हमारे पास ज्यादा आयेगी, समय को तो रोक नहीं सकता।

दादा घर लौट आने के ~~वक्त~~ तक भारी बिजली घटकी और मुन्नी दादा की हाथों में भागकर गयी, लेकिन दादा ने देखा तो मुन्नी बिहोश थी और उसकी नाक से खून बह रही थी।

अस्पताल में आते समय उन्हें पता चला की मुन्नी को कानसर है। डॉक्टर ने कहाँ की स्टेज चार कानसर ~~ल~~ से लौटना मुशकिल है। दादा ~~छूटना~~ टूट गया, लेकिन बाहर पत्तर की तरह बरताव किया।

दादा ने सोचा, मुश्किल है लेकिन ना मुमकिन तो नही, मेहनत पर भरोसा करने वाला वह बूढा हार नही मानना चाहता था।

ओपरेशन और इलाज केलिए वह अपने पूरे ~~पैसे~~ कमाई इस्तेमाल करने केलिए तैयार थे। डॉक्टर ने कहाँ हमारे पास ~~ज्यादा~~ ज़्यादा समय नही है, जितनी जल्दी कर सके उतनी जल्दी सरजरी करवाना ~~ह~~ होगा। दादा मुन्नी से मिलने ~~किलि~~ केलिए गयी। दादा को देखते ही मुन्नी रोने लगी। माफी पूछने लगी। उसे एहसास होगयी की वह जो कुछ भी किया ~~क~~ वह गलत थी। मुन्नी ने ~~~~ दादा से कुछ धीरे कहा। वह सुनते ~~~~ दादा रोने लगे। वह भी पहली बार।

मुन्नी ने यह कहाँ था की : दादा, मैं बड़ी होकर कलक्टर बनुँगी, और आपको हमेशा खुश रखूँगी। उसके साथ - साथ उनके ख्याल भी अच्छे से रखोगी। दादा को रोते देखकर मुन्नी पूछा, "दादा मुझे क्या बीमारी है?" दादा कुछ कहे बिना अपनी पत्थर हाथों को मुन्नी की चीक पर रखकर धीरे छूआ।

दादा ने कहाँ, कल नाक सरजरी है, उसके बाद में सब बताऊँगी। मुन्नी की मासूम दिल डर गयी। और उसने कहाँ नही दादा उसकी कोई ज़रूरत नही। समय होगया है। अब घर चलो। दादा वहाँ से उठकर डॉक्टर के पास गया, और कहाँ कल सरजरी की तैयारी करो, पैसे मैं पहूँचा दूँगी।

Item Code: 642 Participant Code: 105

समय निकल जा रही थी, मुन्नी की तबीयत और खराब होने लगी तो, डॉक्टर ने सरजरी आज ही करने का फैसला लिया, उस तेज़ बारिश में दादा पैसा लेकर आने केलिए घर भाग गए, घर में आकर देखा तो पैसा रखा बरतन टूटकर नीचे फैला हुआ है पैसे, दादा अपनी होश खोने लगे, जो पैसा मिला उसे ज़मीन से उठाकर तक पागल बूढे की तरह अस्पताल आँगन में ओपरेशन तियटर की तरफ भागने लगे, लोगों को लगा की बुढों पागल होगया,

टीक उसी समय सरजरी खतम होगए थे, डॉक्टर ने दादा से कहाँ, हमने बहुत कोशिश की लेकिन मुन्नी अब नही रही, दादा का दिमाग और दिल यह समझने केलिए तैयार नही थी,

दादा ने कहाँ, नही रही का क्या मतलब?
ये रखो यह सारे पैसे, मेरे जिंदगी
की कमाई, यह तुम रखलो, मेरी बच्ची
को मुझे देखो, उसने वह मुझे
छोडकर कैसे जा नही सकती, उसने
कल मुझे वादा किया था की वह
कलक्टर बनूँगी।

अस्पताल की आँगन में
अपनी पोती की लाश का इंतज़ार करकर
दादा रोने लगे, सफेद कपडे पहनती परी
की तरह, सफेद कपडे में मुन्नी को लाया
गया, दादा मुन्नी की लाश को नही
छोडा गले लगाकर रोने लगी,
डॉक्टर ने कहाँ, समय हो गया है,
अब चलें।

बारिश तभी भी बरस रही थी,
घाव से खून निकलने की तरह
दादा की आँख से आँसू आने लगे,
वक्त तभी भी नही रुकी।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)